Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 3, Issue 2 - 2018

विद्यार्थियो पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन (भोपाल शहर के उपनगर संत हिरदाराम नगर के विद्यार्थियो के विशेष सन्दर्भ में)

दीपिका सक्सेना*

शोध सार (Abstract)

भारत में संचार एवं संवाद की प्रभावी एवं लम्बी परंपरा रही है। संचार एवं संवाद के लिए ज्ञान अति आवश्यक है। आज भारत सूचना प्रोधौगिकी की दृष्टि से दुनिया की महाशक्ति बन गया है। वर्तमान में सोशल मीडिया का व्यापक प्रयोग हो रहा है, सोशल मीडिया से सम्पूर्ण मानव जाति के एकीकरण की दूरी कम हो गई है। जनसंचार माध्यमो ने प्रत्येक वर्ग के लोगो को सशक्त बनाया है।

नए माध्यमो में वेब ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ऑनलाइन रेडियो, ऑनलाइन टेलीविज़न, मल्टीमीडिया मोबाइल और सेटेलाइट रेडियो न्यूज़ चैनल का समावेश हुआ है। आज युवा पीढ़ी विशेषकर विद्यार्थियो में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के बढ़ते उपयोग से उनके अध्ययन, उनके सामाजिक जीवन एवं उनके जीवन मूल्यों पर प्रभाव पड़ रहा है। सोशल मीडिया ने वर्तमान समय में ऐसा संसार रच दिया है, जहाँ हम अकेले होकर भी अकेले नही है। विद्यार्थियो ने इस आभासी दुनिया को अपनी वास्तविक दुनिया बना लिया है।

सूत्रशब्द: सोशल मीडिया, अभिव्यक्ति, इन्टरनेट, आभासी, वेब ब्लॉग।

प्रस्तावना

कार्ल मार्क्स ने कभी धर्म को अफीम कहा था जब सोशल मीडिया नही था। यदि आज वे जीवित होते तो निश्चित ही सोशल मीडिया को अफीम कहते। आज सोशल मीडिया की लोगो को विशेषकर विद्यार्थियो को लत लग गई है। आज का विद्यार्थी जितना समय अपने अध्ययन को देता है उतना ही समय वो सोशल मीडिया पर भी व्यतीत करता है। सोशल मीडिया ने ना केवल विचारो की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही दी है अपितु उन्हें अभिव्यक्त करने का एक मंच भी प्रदान किया है। आज सोशल मीडिया कोई नई बात नही है। सोशल मीडिया के उद्भव से सूचना एकत्रित करने के तरीको में भी बदलाव आया है। शैक्षणिक दृष्टि से भी सोशल मीडिया नवाचार की भूमिका निभा रहा है।

*पीएचडी शोधार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सोशल मीडिया कई प्रकार की सुविधाए उपलब्ध करता है जिससे की आप दूसरे व्यक्तिओ से आपसी संवाद स्थापित कर सके।

सोशल मीडिया वेब आधारित वह तकनीक है जो संचार को आपसी संवाद में परिवर्तित कर देती है। सोशल मीडिया सामाजिक सम्वाद के लिए उपयोग होता ही है साथ ही दूर रहने वाले लोगो को भी पास लाने का कार्य सोशल मीडिया भली भांति कर रहा है।परंपरागत माध्यमो की तुलना में सोशल मीडिया कम लागत में किफायती माध्यम है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

यह विषय वर्तमान समय का ज्वलंत विषय है। विद्यार्थियो पर सोशल मीडिया का गहरा प्रभाव देखने को मिल रहा है। विद्यार्थी हो या समाज, शिक्षा और शिक्षको से उनका सम्बन्ध, अध्ययन हो या सामाजिक परिवेश सब पर सोशल मीडिया की महती भूमिका नज़र आ रही है। इस हेतू शोध अध्ययन की आवश्यकता हुई।

शोध के उद्देश्य

- आज के विद्यार्थियो पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना है।
- आज के विद्यार्थियो पर सोशल मीडिया के नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना है।
- सोशल मीडिया विद्यार्थियो को सामाजिक परिवेश से दूर कर रहा है, इसका अध्ययन करना है।
- सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण विद्यार्थियो में नैतिक मूल्यों के हो रहे हनन का अध्ययन करना है।

साहित्य पुनरावलोकन

के. श्रीधर ने अपने अध्ययन “प्रजातंत्र में नए माध्यमो की भूमिका” में बताया कि मीडिया सदैव ही अपनी खबरों को नवीन तकनीक के माध्यम से अपने पाठको तक पहुँचाने के लिए तत्पर रहता है।

डॉ. बंसीलाल एवं परमवीर सिंह ने अपने अध्ययन “सामाजिक मीडिया की विषयवस्तु की विविधता और उसकी उपयोगिता-कुरुक्षेत्र विश्वविध्यालय के स्नातकोत्तर छात्रो का अध्ययन” में बताया कि छात्र वर्ग द्वारा सोशल साइट्स ट्विटर,फेसबुक और ऑरकुट का अत्यधिक प्रयोग किया जा रहा है। ब्लॉग लेखन और स्क्रैप जैसी आधुनिक तकनीक ने इस वर्ग को अभिव्यक्ति का नया माध्यम प्रदान किया है।

उमा यादव ने अपने अध्ययन “नए माध्यम-वास्तविकता और आभासी” में बताया कि इन्टरनेट और सोशल नेट्वोर्कि साइट्स न्यू मीडिया का सर्वाधिक प्रचलित माध्यम है। न्यू मीडिया द्वारा रचित आभासी संसार भी अब वास्तविक लगने लगा है।

दिज्क ने अपनी पुस्तक “दि नेटवर्क सोसाइटी : सोशल आस्पेक्ट ऑफ़ न्यू मीडिया” में कहा है कि “न्यू मीडिया वह मीडिया है, जो समन्वित होने के साथ ही परस्पर संवादी भी है।”

क्वनगया वांग, वेय चेन,यू लियांग ने अपने अध्ययन “दि इफ़ेक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन कॉलेज स्टूडेंट्स में बताया कि महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थी अपना अधिकतम समय सोशल मीडिया साइट्स को देखने में व्यतीत करते है। 90 प्रतिशत विद्यार्थी अपना समय मनोरंजन के लिए इन सोशल साइट्स पर बिताते है। फेसबुक महाविद्यालयीन विद्यार्थियो में सर्वाधिक लोकप्रिय है। महाविद्यालयीन विद्यार्थियो को सामाजिक मीडिया एवं शैक्षणिक गतिविधिओ के बीच सामंजस्य बनाना होगा।

शोध प्राविधि

इस शोध के लिए सर्वप्रथम समस्या का चुनाव किया गया। समस्या के चयन उपरांत सम्बंधित

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

एवं उपलब्ध साहित्य का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया। विद्यार्थियो में स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओ का चयन किया गया जो कि संत हिरदाराम नगर के महाविद्यालय में अध्ययनरत है। स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण शोध उपकरण के रूप में किया गया। इसके लिए विभिन्न शिक्षाविदो एवं विशेषज्ञो से सलाह लेकर प्रश्नावली में प्रश्नों की संख्या स्पष्ट हुई एवं शोध उपकरण का निर्माण हुआ। इसके पश्चात् तथ्यों का अवलोकन एवं संकलन, तथ्यों का सम्पादन, विश्लेषण एवं विवेचन किया गया।

चर : स्वतंत्र चर के रूप में सोशल मीडिया एवं आश्रित चर के रूप में विद्यार्थियो को लिया गया है।

न्यादर्श: प्रस्तुत शोध में न्यादर्श सुविधाजनक एवं उद्देश्यपरक विधि द्वारा किया गया है। प्रद्दत प्राप्त करने हेतू भोपाल शहर के उपनगर संत हिरदाराम नगर के महाविद्यालयों का चयन किया गया। प्रदत्तो की प्राप्ति के लिया 50 छात्रो और 50 छात्राओ का चयन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण और विवेचना

प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ो के विश्लेषण से निष्कर्ष के रूप में जो महत्वपूर्ण परिणाम निकल कर आये है उनका विश्लेषण निम्नलिखित है -

अध्ययन में सहभागी उत्तरदाता स्नातक के विद्यार्थी है A अध्ययन में शामिल उत्तरदाता १८ से २१ वर्ष के आयु वर्ग के है A अध्ययन में उन्ही उत्तरदाताओ को शामिल किया गया है, जो सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैA ऐसे में १०० प्रतिशत किसी ना किसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स से जुड़े हुए है।

तकनीकी के इस युग में सोशल साइट्स पर अपनी प्रोफाइल होना एक उच्च जीवन शैली का प्रतीक बन गया है।

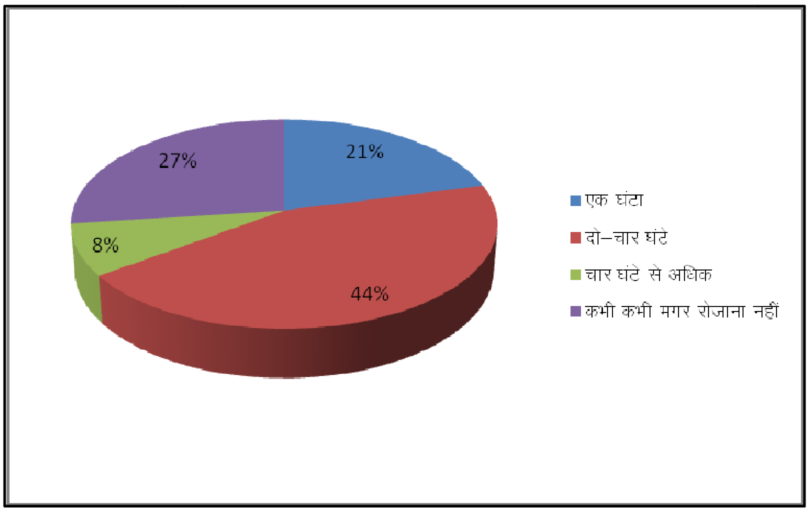

चित्र क्रमांक 1.

अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओ में 21 प्रतिशत रोजाना एक घंटा, 44 प्रतिशत रोजाना 2 से 4 घंटे, 4 घंटे से अधिक समय व्यतीत करने वाले 8 प्रतिशत एवं कभी कभी मगर रोजाना सोशल साइट्स पर समय देने वाले 27 प्रतिशत लोग है। अतः विधार्थी रोजाना अपना समय सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर व्यतीत करते है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-3501

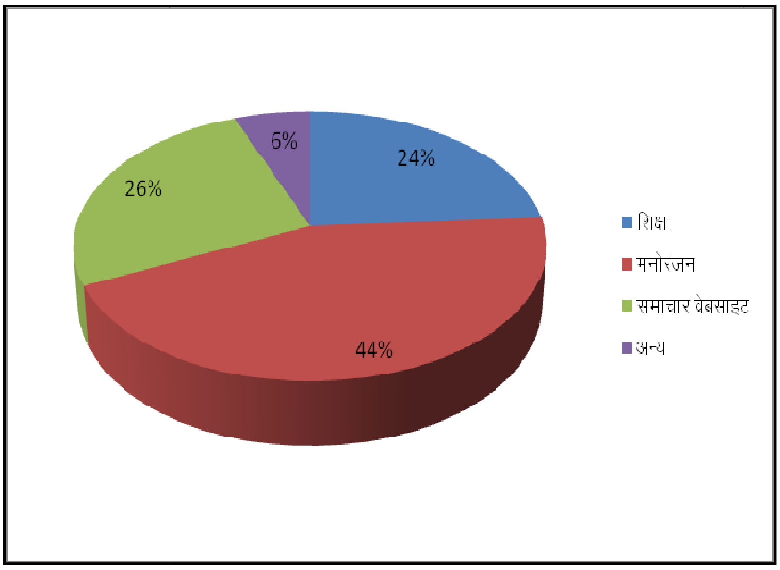

चित्र क्रमांक 2.

अध्ययन से पता चलता है कि 44 प्रतिशत लोग मनोरंजन के लिए, 26 प्रतिशत समाचारों के लिए, 24 प्रतिशत शिक्षा एवं 6 प्रतिशत अन्य कारणों से इन्टरनेट पर इन साइट्स पर ज्यादा समय देना पसंद करते है। सोशल साइट्स के आने के बाद मनोरंजन बहुत ही सहज, सुलभ व सरल ढंग से उपलब्ध है। विद्यार्थियो के लिए ये इन्फोटेंमेन्ट का एक बहुत किफायती माध्यम है।

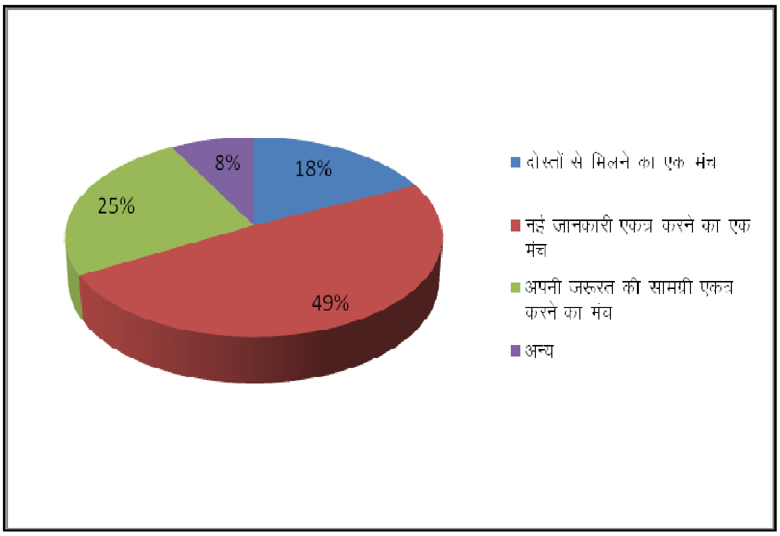

चित्र क्रमांक 3.

अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओ में 49 प्रतिशत लोगो का मानना है कि उनके लिए सोशल मीडिया नई जानकारी एकत्र करने का मंच है, वही 25 प्रतिशत लोगो का मानना है कि यह उनकी जरुरत की सामग्री एकत्र करने का मंच है। 18 प्रतिशत लोगो के लिए ये दोस्तों से मिलने का मंच है, जबकि अन्य 6 प्रतिशत लोगो के लिए सोशल मीडिया अन्य जानकारी सांझा करने का मंच है। आज के इस प्रतियोगिता के युग में विद्यार्थी अपने आपको नई जानकारियो से परिपूर्ण रखना चाहता है। सोशल साइट्स उन्हें हर प्रकार से अप-टू-डेट रखता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

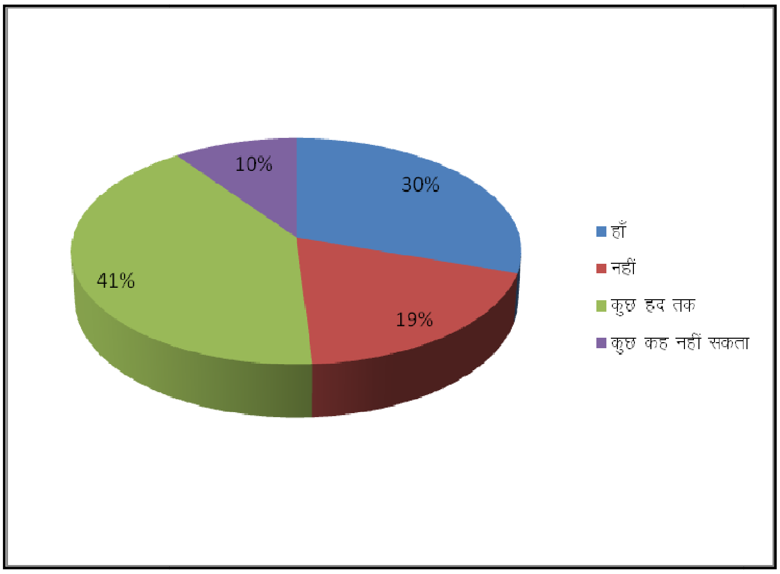

चित्र क्रमांक 4.

अध्ययन में जब उत्तरदाताओ से पूछा गया कि क्या सोशल मीडिया विद्यार्थियो को सामाजिक परिवेश से दूर कर रहा है तो 41 प्रतिशत ने माना कि ये कुछ हद तक हमे सामजिक परिवेश से दूर कर रहा है। 30 प्रतिशत ने इसे स्वीकार किया। 19 प्रतिशत ने नहीं कहा वही 10 प्रतिशत ने कुछ कह नही सकते के पक्ष में अपना अभिमत दिया। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है परन्तु सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग ने उसे सामाजिक परिवेश से दूर कर दिया है।

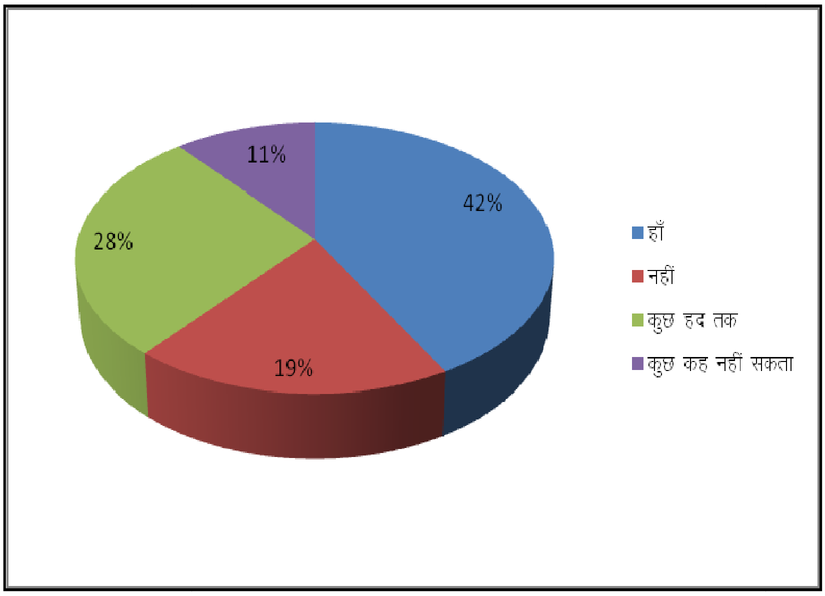

चित्र क्रमांक 5.

अध्ययन में 42 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने इसे विचारो की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना। 28 प्रतिशत ने कुछ हद तक, 19 प्रतिशत ने नहीं और 11 प्रतिशत ने कुछ कह नही सकते के पक्ष में अपना अभिमत दिया। विद्यार्थी कई ज्वलंत विषयों के लिए अपने स्वरों को सोशल मीडिया पर मुखर कर विचारो को अभिव्यक्ति प्रदान करते है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

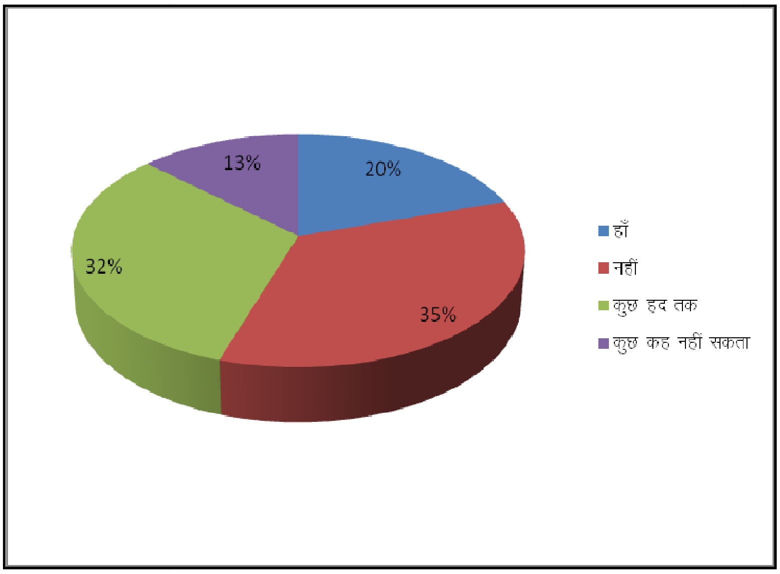

चित्र क्रमांक 6.

अध्ययन में एक महत्वपूर्ण बात सामने आई कि 35 प्रतिशत विद्यार्थियो ने इस बात पर असहमति जताई कि सोशल मीडिया के कारन उनके नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है। 32 प्रतिशत ने इसे कुछ हद तक स्वीकार किया वही 20 प्रतिशत ने इस कथन को स्वीकार किया। 13 प्रतिशत लोगो ने कहा कि वे कुछ नही कह सकते। अतः कही ना कही सोशल मीडिया नैतिक मूल्यों को प्रभावित तो कर रहा है यह विचारणीय है।

शोध के निष्कर्ष

- आज सोशल मीडिया साइट्स इतनी अधिक प्रचलन में है कि प्रत्येक विद्यार्थी इससे अवगत है।
- स्मार्ट फोन के आने से सोशल नेटवर्किग साइट्स पर समय बिताना आसान हो गया है।
- विद्यार्थी सर्वाधिक समय मनोरंजन साइट्स पर व्यतीत करना पसंद करता है।
- अधिकांश विद्यार्थी अपने प्रोजेक्ट्स को सोशल मीडिया पर बने अपने मंच और समूह के माध्यम से मैनेज करते है। उनके अध्ययन में सोशल मीडिया का महत्व है क्योंकि वे इसे नई जानकारी एकत्रित करने का मंच मानते है।
- विद्यार्थी यह स्वीकार करते है कि एक हद तक सोशल मीडिया का उनके जीवन में महत्व है।
- विद्यार्थियो के अनुसार सोशल मीडिया गुणवत्तापरक शिक्षा को प्रभावित कर रही है परन्तु शिक्षको की महत्ता पर कोई प्रभाव नही है।

भावी शोध के लिए सुझाव

- अगले शोध हेतू न्यादर्श का चुनाव वृहद स्तर पर होना चाहिए।
- शोध कार्य हेतू शोध क्षेत्र का विस्तार किया जाना चाहिए।
- सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन शिक्षाविदो,कर्मचारियो और अभिभावकों पर भी किया जाना चाहिए।

सुझाव

- विद्यार्थियो को उनकी सृजनात्मकता को बढ़ाने हेतू प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- सोशल मीडिया के सकारात्मक पक्ष से परिचित कराते हुए अपने विचारो की इस मंच पर सकारात्मक अभिव्यक्ति करने के लिए प्रेरित करे।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

- **शिक्षको को भी सोशल मीडिया के नवाचारी एवं नवप्रवर्तन उपयोग के बारे में जानना चाहिए।**
- **शिक्षा के क्षेत्र में सीखने-सीखाने के तरीको में बदलाव की आवश्यकता है।**
- **अभिभावकों को भी अपने बच्चो को पर्याप्त समय देने की आवश्यकता है ताकि बच्चा परिवार से जुडा रहे और उसके मूल्यों का हनन ना हो।**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. **यादव, अवधेश कुमार, (2013), भारत में जनसंचार एवं पत्रकारिता, पंचकुला: हरियाणा ग्रन्थ अकादमी।**

[2]. Martin, Paul. Erickson, Thomas. Social Media-Usage and Impact. Global Vision Publishing House, 2013. Print

[3]. Mathur. Prashant, K, Social Media and Networking. Kanishka Publishers Distributors, 2012. Print

[4]. Gautam, Naveen. “Social media- new tool for communication.” Communication today. Vol- 15.No-3(2013): 103.Print

[5]. Ogra, Ashok. “The republic of social media.” Communication today. Vol- 15. No-3 (2013): 88. Print.

[6]. Nayak. Suresh, Chandra,. “Social media: Connecting one and all” Communication today. Vol- 15. No-4(2013): 65. Print.

[7]. **श्रीवास्तव, मुकुल.चौधरी, ऋतेष.** “**सोशल मीडिया अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम (एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन)”. कम्युनिकेशन टुडे. अंक-15. क्रमांक-4 (2013): 1. प्रिंट।**

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**